प्रातः क्लास 20/12/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। रूहानी बच्चों को बाप बैठ पढ़ाते हैं यह तो सभी जानते हैं। अभी बाप पूछते हैं जैसे कहते हैं ना पुरुषार्थ बड़ा या प्रारब्ध बड़ी? वैसे यह भी पूछना हो(ता) है योग बड़ा या ज्ञान बड़ा? यह भी पूछ सकते हो आत्मा बड़ा या शरीर बड़ा? तुम देखते हो बरोबर आत्मा को इतना याद नहीं करते हैं जितना शरीर को याद करते हैं। आत्मा चली जाती है तो भी याद आता रहता है। तो आत्मा बड़ी या शरीर? वैसे बाप पूछते हैं योग अर्थात् याद बड़ी या ज्ञान बड़ा? (याद)। क्यों? (याद से ही पावन बनना है)। हाँ, मुख्य बात है ही पवित्रता की। इस समय पतित बने हुए हैं; इसलिए दुखी हैं। जब तक बाप को याद न करें तो पावन सुखी बन (न) सकें और पद भी ऊँच मिल न सके। दो चीज़ में एक बड़ी ज़रूर होती है। दो एक जैसे नहीं हो सकती। पवित्र बनने बिगर पवित्रधाम जा न सके। पवित्र बनो तब ज्ञान की प्रारब्ध भी पा सको। तो विचार चलाना होता है याद अच्छी या ज्ञान अच्छा? पहले है ही मन्मनाभव। फिर पीछे कहा जाता है मद्याजीभव। ऐसे नहीं कि पहले मद्याजीभव कह फिर मन्मनाभव कहेंगे, नहीं। पहले मन्मनाभव। बच्चों को मुख्य बात बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो और बाप को याद करो। बाप कौन है यह तो तुम्हीं समझते हो। मनुष्य कहते भी हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप कौन है यह भी तुम्हीं समझते हो। मनुष्य कहते भी हैं गॉड फादर। तुम ज़रूर सभी बाकी ब्रदर्स ही ठहरे। यह सभी जानते हैं। गाते भी हैं सभी का दाता राम। राम कोई वह रघुपति नहीं। राम को कब बाबा नहीं कह सकते। बाबा एक तो शरीरधारी को कहा जाता है, दूसरा अशरीरी को कहा जाता है। आत्मा भी पहले अशरीरी है फिर शरीरधारी बनती है। पहले हम आत्माएँ बाप के साथ रहती हैं फिर पार्ट बजाने लौकिक देहधारी बाप के पास आते हैं। यह सभी बातें बुद्धि में याद रखनी हैं। और सभी पढ़ाइयाँ भूलनी हैं। यह तो तुम जानते हो हम अभी संगम पर हैं। फिर नई दुनिया में जाना है। पुरानी दुनिया खत्म होनी है। यह कोई को भी पता नहीं है। नई दुनिया में जाने लिए पावन भी ज़रूर बनना है। दैवीगुण धारण करनी है। पावन बनने लिए बाप को पूरा याद करना है, ताकि पाप सभी कट जाएँ। मुख्य बात है ना। अभी तुम पतित दुनिया में हो। पावन दुनिया में जाना है। यह ज्ञान मनुष्यों के लिए ही है। जानवर नहीं समझेंगे। मनुष्यों को वा मनुष्य की आत्माओं को बाप फिर से आकर समझाते हैं। अभी फिर देवी-देवता बनना है; इसलिए मुझे याद करो तो तुम पावन बनोगे। इसको कहा जाता है योगअग्नि। इससे तुम्हारे सभी पाप मिट जावेंगे। अगर मुझे पूरी रीत याद करते रहेंगे तो यह नॉलेज है ना। ड्रामा का चक्र तो चला आता है। उनको कब अन्त नहीं पाया जाता। इनको कहा जाता है अनादि। तुम्हारी बुद्धि में आता है बरोबर हम सतयुग और कलियुग के पार्टधारी ऑलराउण्ड एक्टर्स हैं। सभी तो ऑलराउण्ड नहीं हो सकते; क्योंकि फर्स्ट, सेकण्ड, थर्ड नम्बरवार हैं ना। तुम्हारे में भी जो विजय माला में आवेंगे वह अच्छी रीत समझ सकेंगे। सूर्यवंशी-चंद्रवंशी बनना तो है ना। जो कल्प पहले सूर्यवंशी बने होंगे वही बनेंगे। उनके पुरुषार्थ से समझा जाता है। आगे चल बहुत समझेंगे। समझते तो हैं ना यह ब्राह्मणी बहुत अच्छी समझाती है, यह सेकण्ड नम्बर है। मम्मा भी सबसे अच्छी समझाने वाली ब्राह्मणी थी। मीठा आवाज़ भी था। समझाती भी बहुत अच्छी थी। कहाँ भी जाती थी तो सभी तरफ से मम्मा पास आ जाते थे। जितना-2 जो होशियार होता है उनके पिछाड़ी बहुत इकट्ठे हो जाते हैं और फिर वह ऊँच पद भी पाते हैं। अभी तुमको बाप प्रैक्टिस करा रहे हैं। ऊँच ते ऊँच श्रीमत बाप की तुमको मिल रही है। श्रीमत देने वाला तो एक ही बाप है। बाकी धारणा करने वालों में नम्बरवार हैं। बाप जो मत देते हैं उनको धारण करना है और कराना है। पूछा जाता है रचयिता बाप और रचना के आदि-मध्य-अंत को जानते हो? तो सिवाय तुम्हारे और कोई भी नहीं जानते। वह तो कह देते परमात्मा सर्वव्यापी है। बाप को तो कहा जाता है ज्ञान का सागर। शान्ति का सागर। नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश करा देते हैं। तुम बच्चे समझते हो अभी नई दुनिया स्थापन हो रही है। हम कर रहे

हैं। तो अपन को महावीर समझेंगे ना। तुम्हारी भी सेना है। शिव शक्ति सेना वा पाण्डव सेना। शक्ति मिली है तुमको शिवबाबा से। शिवबाबा ही सर्वशक्तिवान है। अभी तुम भी बन रहे हो। बनेंगे ऐसे ही जैसे कल्प-कल्पांतर बनते आए हैं। इसकी आदि अथवा अंत नहीं है। अनादि चक्र फिरता रहता है। तुम्हारी बुद्धि में है हम कल्प-कल्पांतर यह पार्ट बजाते आए हैं। हम शिवबाबा की संतान हैं। सर्वशक्तिवान हैं। रावण क्या है, कौन है, यह कोई भी नहीं जानते। रावणराज्य में ही यह 5 विकार आते हैं। इसमें भी मुख्य है देहअभिमान। देहअभिमान के कारण ही फिर और विकार आते हैं, तुम उल्टी बन जाते हो। बाकी रावण कोई चीज़ थोड़े ही है। बाकी ऐसी 10 शीश आदि की बात नहीं। यह समझने लिए चित्र बनाया है। इनमें है कुछ नहीं। यह भी ड्रामा में नूँध है। बुद्धि में आता है ड्रामा अनुसार ऑटोमैटिकली भक्तिमार्ग में भी आना होता है। तो बच्चे जानते हैं बाप तो है निराकार। बिन्दी। वह नॉलेज तो ज़रूर शरीर धारण कर ही सुनावेंगे ना। बाप ही आकर माया पर जीत पहनाते हैं। 5 विकारों को माया कहा जाता है। रावण का चित्र भी बनाया है। स्त्री और पुरुष दोनों में 5 विकार हैं। तुम समझते हो बरोबर अभी रावण मत चल रही है। रावण की है विकारी मत और यह है ईश्वर की निर्विकारी मत। बाप श्रीमत देते हैं। श्रीमत पर चलने से ही तुम ऊँच बनेंगे। फिर आधा कल्प होती है विकारी मत। इसलिए इसका नाम ही रखा है दस शीश वाला रावण। विकारों में भी पहले है अहंकार। देह अहंकार बिगर काम आ नहीं सकता। पहले है देहअभिमान, फिर विकार हैं। यह सभी बातें बाप ही तुम बच्चों को बैठ समझाते हैं। कल्प-2 अनेक बार समझाया है। समझने में टाइम भी इतना ही लगता है जितना हर कल्प लगा है। बुद्धि में समझते हो ना बाप आकर हमको आस्तिक बनाते हैं। रचयिता और रचना का राज़ समझाते हैं। कहते हैं ना इस सृष्टि का क्रियेटर कौन है? क्रियेटर तो गॉड है। यूँ तो यह सभी रचना अनादि है; परन्तु इनको समझाने वाला एक ही गॉड फादर है। उनमें ही ज्ञान है इसलिए क्रियेटर कहा जाता है। बाप खुद भी ड्रामा के बंधन में बांधा हुआ है। है अनादि। कुछ बनाते नहीं हैं। इतना बेहद का ड्रामा अनादि शूट किया हुआ है। हद के ड्रामा तो ढेर के ढेर शूट होते रहते हैं। यह है बेहद का बना बनाया अविनाशी ड्रामा। इसमें ज़रा भी फर्क नहीं पड़ सकता। बेहद के ड्रामा का चक्र फिरता ही रहता है। तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान, सतोप्रधान से तमोप्रधान बनते हो। सतोप्रधान बनने में पवित्रता की मुख्य बात है। पवित्र दुनिया में कितना सुख है। पतित दुनिया में कितना अपार दुख है। दुखधाम में है अपरमअपार दुख। सतयुग में है अपरमअपार सुख। दुखधाम का भी मनुष्य वर्णन नहीं कर सकते; क्योंकि मनुष्यों को ड्यूरेशन का ही पता नहीं है। तुम समझते हो आधा कल्प है दुखधाम। द्वापर में है सेमी दुख। कलियुग में है पूरा दुख। सतयुग में पूरा सुख, त्रेता में सेमी सुख। यह सभी बातें बुद्धि में अच्छी तरह धारण करनी है। दूसरा कोई नॉलेज जानते ही नहीं। आगे समझते थे यह विद्वान-पंडित आदि बड़े होशियार हैं। अभी तुम समझते हो वह तो कुछ भी नहीं जानते। यह चक्र कैसे फिरता है, कुछ भी नहीं जानते। अभी तुम सभी धर्म वालों के जीवन कहानी को जानते हो। फलाने ने फलाने समय धर्म स्थापन किया। फिर नीचे उतरने लग जाते हैं। पहले चढ़ती कला होती है फिर उतरते हैं। देवताएँ तो पवित्र हैं ना। सभी से भारी महिमा किसकी होनी चाहिए? पूछते हो हू इज़ हू इन द वर्ल्ड? ऊँच ते ऊँच पद किसका? ऊँच ते ऊँच धन किसके पास है? ऊँच ते ऊँच विद्वान कौन है? सतयुग में तो ऐसे नहीं पूछेंगे। वहाँ यह प्रश्न पूछने की दरकार ही नहीं। अभी तुम बच्चे समझते हो सभी से बड़ा ऊँच ते ऊँच है भगवान। गाते भी हैं ऊँच ते ऊँच भगवान सकल सृष्टि तेरे सूत्र धारी, तुमरी गत मत तुम्हीं जानो,..... बाप की महिमा गाते हैं ना। तुम भी गाते थे ना। अभी तुमको प्रैक्टिकल में मालूम है। श्रीमत से कैसे स्वर्ग की स्थापना होती है। यह तुम्हीं जानो और कोई नहीं जानते। बाप तुम बच्चों को सुनाते हैं। तुम भी फिर औरों को सुनाते हो। श्रीमत से मनुष्य सृष्टि कैसे बनती है वह भी बैठ सुनाते हैं। गीता भी एक गीत है ना। गीता

को कहानी कहो तो भी ठीक है। श्रीमत का गीत वा अखानी बनाते हैं। लांग लांग..... कभी, वह भी बतानी पड़े ना। तुम तो पूरे तिथि-तारीख, मिनट-सेकण्ड बना सकते हो। ड्रामा की आयु 5000 वर्ष पूरे एक्युरेट है। पहले-2 तो बोलो बाप को जानते हो? वह ज्ञान का सागर है, टीचर है। तुम बच्चों को भी तीनों रूपों में याद करना है। बाप को बाप तो सभी जानते हैं। सभी कहते हैं हम सभी ब्रदर्स हैं। एक बाप बाकी सभी बच्चे। यह समझना तो बहुत सहज है। इस समय 500 करोड़ मनुष्य हैं। सभी किसके बच्चे हैं? बाप के। सभी (कहते) हैं उनको गॉड फादर। यह भी समझाना चाहिए फादर एक है। बाकी आत्माएँ तो ढेर हैं। यह तो कोई भी समझ सकते हैं; परन्तु मनुष्यों की इतनी पत्थर बुद्धि है जो ऐसी सहज बात भी समझते नहीं हैं। बाप कहते हैं तुम सभी मेरे बच्चे ब्रदर्स हो। मैंने जिसमें प्रवेश किया है यह भी ब्रदर हैं, पढ़ रहे हैं। आत्मा को ब्रदर ही कहेंगे। सभी ब्रदर को बाप से वर्सा मिलता है। बाप सभी आत्माओं का है तो सभी को वर्सा मिलता है। सभी आत्माएँ भाई-2 हैं। सभी बेहद के ब्रदर्स को वर्सा मिलता है। लौकिक बाप से सिर्फ बच्चों को वर्सा मिलता है। बच्चियों को नहीं। आगे हाफ पार्टनर कहते थे। अभी तो सभी खा जाते हैं। वह लोग तो बेहद के बाप को जानते ही नहीं। बेहद के बाप को ही क्रियेटर कहा जाता है। क्रियेट कब किया, यह प्रश्न नहीं उठ सकता। अनादि है। बाप आकर सिर्फ नॉलेज समझाते हैं। तुम बच्चे जानते हो हमारा बाबा है, हमको पढ़ाते भी हैं। साथ भी ले जावेंगे। यह ज़रूर सदैव समझाओ जो मनुष्यों की बुद्धि में बैठे और सर्वव्यापी की भी बात बुद्धि से निकल जाए। गॉड फादर है, उनको टीचर भी कहा जाता है। चैतन्य होने कारण उनमें ज्ञान है। सत्-चित्-आनन्द स्वरूप है। सचखण्ड स्थापन करने वाला, सच बोलने वाला है। सारे विश्व को सच्चा बनाने वाला है। तुम जानते हो भारत ही हेविन था। सच ही सच था। यह अभी तुम जानते हो आधा कल्प जो पास हुआ (सतयुग-त्रेता) वह सच्चे बाप का स्थापन किया हुआ सच खण्ड था, जो फिर अभी झूठ खण्ड बना है। युग तो है ना। पतन और उत्थान। इन तुम्हारे अक्षरों को पता नहीं मनुष्य समझते हैं वा नहीं। तुम बच्चों को यह भी समझाना पड़े—पावन कैसे बनते हैं फिर पतित कैसे बनते हैं? यह भी प्वाइंट्स हैं। भारत जो ऊँच स्वर्ग था फिर गिर कर नर्क कैसे बना है? यह है वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी। भारत ही पावन था। फिर भारत ही पतित बना है। यह भी प्वाइंट्स है, भारत सतयुग पावन स्वर्ग कैसे था? अभी वही भारत पतित कलियुग कैसे बना है? आओ तो हम हिस्ट्री-जॉग्राफी हम समझावें। और तो कोई कुछ भी नहीं जानते। उनसे हम क्या पूछें। वह तो जानते ही नहीं। तुम्हारे सिवाय दुनिया में कोई भी नहीं जानते। बाप ने तुमको समझाया है। बाकी सभी हैं मनुष्यों की समझ। तुम बाप की श्रीमत सुनावेंगे। बोलो, हम बता सकते हैं भारत जो पैराडाइज़, स्वर्ग, हेविन था, वह अभी हेल कैसे बना है फिर हेविन कैसे बनना है, हम बता सकते हैं। वह तो सभी भूटू हैं, उनसे तुम क्या पूछेंगे। वह तो जानते ही नहीं कुछ भी नहीं। बोलो, हम आप को ऐसी-2 बातें सुनावेंगे। वह जानने भी चाहते हैं। तुम सारी दुनिया को निमंत्रण दे सकते हो। आओ तो हम आपको यह यह समझावें। इस समय मनुष्य 500 करोड़ हैं, फिर नई दुनिया में नव लाख हो जावेंगे। तुम जो जानते हो वह बतावेंगे। जो जानने लिए ही मनुष्य हैरान हैं! यूरोपियन लोग फिर भी जानते हैं कि पैराडाइज़ था। परिस्तान में देवताएँ रहते थे। चित्र तो उन्हों के ही थे। यह स्वर्ग के चित्र हैं ना। इन्होंने यह राज्य कैसे पाया यह तुम जानते हो। तुम समझा सकते हो। इसके लिए ही तुम सम्मेलन कर रहे हो। तुमको फिर किसने समझाया, वह भी बताना पड़े कि बेहद के बाप ने। हर 5000 वर्ष बाद ही बाप सुनाते हैं। ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना, शंकर द्वारा पुरानी दुनिया का विनाश। यह भी लगा हुआ है। लिस्ट बनाकर फिर सभी को निमंत्रण दो। यह भी बाबा समझते हैं जब तुम्हारा शो होना होगा तब ही उन्हों को तीर भी लगेगा। तब तो बाप की महिमा गाते हैं। तुमरी गत मत तुम्हीं जानो। तुम जिनको सुनाते हो उनसे सर्व की सद्गति हो जाती है। सर्व की सद्गति

माना ही स्वर्ग की स्थापना करना। ऐसी-2 बातें तुम बच्चों की बुद्धि में होनी चाहिए। नित्य नयर सुनते रहते हो। एक सेकण्ड दूसरे सेकण्ड से न्यारा। यह है बेहद का ड्रामा, नित्य नया है। वह हद का ड्रामा तो फिर विनाश हो जाता है। यह अनादि अविनाशी ड्रामा है। तुम जानते हो इस बेहद के ड्रामा के पार्टधारी कौन-2 हैं। आत्मा कितनी छोटी बिन्दी है। बाप कहते हैं गुह्य-2 बातें तुमको सुनाता हूँ। वण्डर है ना! वण्डर ऑफ दी वर्ल्ड यह है। वण्डर बिगर कुछ भी कह नहीं सकते। आत्मा में पार्ट अनादि चलता रहता है। कहेंगे—कुदरत। मनुष्य कैसे पैदा होता है, वण्डर है ना। मच्छलियाँ आदि जीव-जन्तु और सभी कैसे निकलते हैं वण्डर है। इनका अन्त कोई पा नहीं सकता। तुम सारी दुनिया के आदि-मध्य-अन्त, क्रियेटर, डाइरैक्टर, मुख्य एक्टर को जान लिया तो इसमें सभी आ जाता है। बाप ही आ करके यह सभी बातें सुनाते हैं। अभी तुम बाप रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अंत को जान गए हो। आगे तुमको बहुत समझ मिलेगी। समझ को ही सा॰ कहा जाता है। सिर्फ सा॰ से फायदा नहीं। समझ भी चाहिए। तुम जानते हो हम ही राज्य करेंगे विश्व पर। खुशी होनी चाहिए। हम बेहद सुख का वर्सा बाप से पा रहे हैं। कोई दूर नहीं। इम्तहान पास होने में बाकी आठ वर्ष हैं। इनका भी तुमको सा॰ होगा। ज्ञान भी बाप देंगे। यह ज्ञान तो बाप ही देते हैं। भक्तिमार्ग में भल सा॰ होते हैं; परन्तु कुछ समझ में नहीं आता। सिर्फ खुशी होती है। कुछ भी प्राप्त नहीं। चित्र भी कितने ढेर हैं। सूढ़ वाला गणेश। कितनी पूजा होती है। हम तो कहेंगे यह सभी नॉनसेन्स हैं। ऐसे मनुष्य तो होते ही नहीं। भगवान सूढ़ वाला तो होता ही नहीं। हनुमान की भी बहुत पूजा करते हैं। फायदा तो कुछ भी नहीं। भक्ति से दुर्गति ही होती है। कितने यह फालतू चित्र हैं। राजयोग तो उनमें है नहीं। वह सभी हैं हठयोग के चित्र। लाखों रुपया कमाते हैं। बाप प्वाइट्स तो बहुत समझाते रहते हैं। यह यह समझाओ। भारत का प्राचीन राजयोग किसने सिखाया, जिससे पैराडाइज़ बना? जो प्रैक्टिकल बना सकते हैं, जिनको आना होगा, आवेंगे। तुम अखबार में भी डाल सकते हो। हम यह यह समझा सकते हैं। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग और नमस्ते।

प्वाइंट्स :- माया भी कोई कम नहीं है। अच्छी-2 बच्चियों आदि को देखते हैं तो क्रिमिनल ख्यालात कितनी आती है। बड़ी परहेज रखनी पड़ती है। सम्बन्धियों की भी टेम्पटेशन कितनी होती है। कहते हैं अगर तुम यहाँ जाती हो तो घर से निकल जाओ। वर्सा कुछ भी नहीं मिलेगा। फिर समझते हैं पता नहीं चला सकूँ वा नहीं। अन्दर बहुत घुटका खाते हैं। कहते हैं बाबा इनके पास धन तो बहुत है, लखपति है। अच्छा, वहाँ जाना है तो जो चाहिए सो करो। बाप समझाते हैं आज लाख (मि)ले, कल मत जाओ तो सभी खत्म हो जावेगा। हम तो 21 जन्मों लिए इतना धन देते हैं जो कब खत्म नहीं हो सकता; परन्तु देखते हुए मुख खाना मुश्किल है। बाबा समझाते हैं इन आँखों से तुम जो कुछ देखते हो यह सभी खत्म हो जाना है। अभी जज करो। रास्ता बताया अभी जज करो। इसलिए बाप कहते हैं बहुत धनवान भी आए न सकेंगे। बाप का नाम ही है गरीब निवाज। गरीब दुखी होते हैं तो उनको ही सुख मिलना है। वह आते भी देरी से हैं। वह ऐसे नहीं कहेंगे हमको 4 बच्चे हैं। पाँचवाँ शिवबाबा है। शिवबाबा तो पहला नम्बर का फर्स्ट क्लास बच्चा है। उनको वारिस बनाओ तो तुम 21 जन्मों लिए वारिस बन सकते हो। मेहनत है। बहुत अन्दर घुटका खाते हैं। बाप को बहुत याद करना है तब तमोप्रधान से सतोप्रधान बन सकेंगे। कहते हैं बाबा माया याद करने नहीं देती है। भुला देती है। बाप कहते हैं तुमने प्रतिज्ञा किया है आपके सिवाय और कोई को याद नहीं करेंगे। भक्तिमार्ग में भी गायन है। 21 जन्म का वर्सा कल्प-कल्पांतर मिला हुआ है। तो वह याद पड़ता है। फिर भी बाप बच्चों को सावधान करते हैं। बाप को याद करते रहो। आगे चल सभी देखेंगे बरोबर यह विनाश का समय है। कलियुग पुरानी दुनिया है। मनुष्य तो अभी घोर अंधियारे में पड़े हैं। गायन भी है विनाश काले विपरीत बुद्धि। अच्छा, ओम